मार्शल योजना और यूरोपीय पुनर्निर्माण: आर्थिक सहयोग और शीत युद्ध की राजनीति
The Marshall Plan and European Reconstruction: Economic Cooperation and Cold War Politics

द्वितीय विश्व युद्ध के बाद यूरोप की अर्थव्यवस्था गंभीर रूप से नष्ट हो चुकी थी। औद्योगिक उत्पादन गिर चुका था, बुनियादी ढाँचा ध्वस्त था और व्यापक बेरोजगारी तथा खाद्य संकट की स्थिति थी। इस परिप्रेक्ष्य में 1947 में अमेरिका द्वारा मार्शल योजना (European Recovery Program) की घोषणा की गई, जिसका उद्देश्य यूरोप के आर्थिक पुनर्निर्माण को प्रोत्साहित करना था।

मार्शल योजना के अंतर्गत पश्चिमी यूरोपीय देशों को व्यापक आर्थिक सहायता, तकनीकी सहयोग और औद्योगिक पुनर्गठन के लिए संसाधन प्रदान किए गए। 1948 से 1952 के बीच अरबों डॉलर की सहायता दी गई, जिससे औद्योगिक उत्पादन में वृद्धि, व्यापार के पुनरुत्थान और आर्थिक स्थिरता की प्रक्रिया प्रारंभ हुई। यह योजना केवल आर्थिक कार्यक्रम नहीं थी, बल्कि एक व्यापक भू-राजनीतिक रणनीति भी थी।

मार्शल योजना का एक प्रमुख उद्देश्य साम्यवाद के प्रसार को रोकना था। आर्थिक स्थिरता के माध्यम से राजनीतिक स्थिरता स्थापित करना अमेरिकी विदेश नीति का केंद्रीय लक्ष्य था। सोवियत संघ ने इस योजना को अमेरिकी आर्थिक साम्राज्यवाद का उपकरण माना और पूर्वी यूरोपीय देशों को इसमें भाग लेने से रोका। इसके परिणामस्वरूप यूरोप का आर्थिक विभाजन और अधिक गहरा हो गया।

यूरोपीय आर्थिक सहयोग संगठन (OEEC) की स्थापना ने बहुपक्षीय आर्थिक सहयोग को बढ़ावा दिया। इस प्रक्रिया ने आगे चलकर यूरोपीय एकीकरण की आधारशिला रखी। पश्चिमी यूरोप में आर्थिक पुनरुत्थान ने कल्याणकारी राज्य के विकास और सामाजिक स्थिरता को भी प्रोत्साहित किया।

इतिहासलेखन में मार्शल योजना की विभिन्न व्याख्याएँ प्रस्तुत की गई हैं। पारंपरिक दृष्टिकोण इसे उदार अंतरराष्ट्रीय सहयोग का उदाहरण मानता है, जबकि संशोधनवादी इतिहासकार इसे अमेरिकी पूंजीवादी विस्तार की रणनीति के रूप में देखते हैं। कुछ विद्वान इसे आर्थिक पुनर्निर्माण और सामरिक हितों के संयुक्त कार्यक्रम के रूप में विश्लेषित करते हैं।

निष्कर्षतः मार्शल योजना ने यूरोप के आर्थिक पुनर्निर्माण में निर्णायक भूमिका निभाई, साथ ही शीत युद्ध की राजनीतिक संरचना को भी मजबूत किया। इसने पश्चिमी यूरोप में स्थिर पूंजीवादी अर्थव्यवस्था और क्षेत्रीय सहयोग की नींव स्थापित की, जो आगे चलकर यूरोपीय एकीकरण की दिशा में महत्वपूर्ण सिद्ध हुई।